SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

गोपालदास नीरज की कविताओं में आध्यात्मिक चेतन

रामेश्वर पाण्डेय, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
संदीप कुमार शुक्ला, हिंदी विभाग, एम. फिल.,
शा. ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
रामेश्वर पाण्डेय, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
संदीप कुमार शुक्ला, हिंदी विभाग, एम. फिल.,
शा. ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय,
रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 05/08/2021
Plagiarism : 00% on 30/07/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Friday, July 30, 2021
Statistics: 5 words Plagiarized / 1095 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

xksikynkl uhjt dh dforkvksa esa vk/;kfRed psru 'kks/k lkjka'k vk/;kfRed lk/kuk ,d HkkoifjorZu gS] tks izk.kh dks mlds fuEurj psruk ls mPprj psruk dh vksj vxzlj djus ds fy, izsj.kknk;h gksrh gS] vkS| tho txr ds d.k&d.k eas ml 'kfDr dh psruk ykSfdd thou ds fy, lkaURouk iznku djrh gSA vk/;kfRedrk gekjh laLd`fr ls tqM+k gS] D;kssafd Hkkjr ds yksx vkRek&ijekRek fo'okl djrs gSA vkS| leLr tho txr blh esa yhu gSA bUgh rRoks dh [kkst dks dfork ds ry ij ykdj dfork esa vk/;kfRed psruk dh [kkst dbZ jpukdkjksa us dh gSA ,d dfo es tks mlds vUr% T;ksfr ls LQqfjr gksrk gS] mlds ek/;e ls og vke tuekul rd i¡gqpkus dk iz;Ru

शोध सार

आध्यात्मिक साधना एक भावपरिवर्तन है, जो प्राणी को उसके निम्नतर चेतना से उच्चतर चेतना की ओर अग्रसर करने के लिए प्रेरणादायी होती है और जीव जगत के कण–कण में उस शक्ति की चेतना लौकिक जीवन के लिए सान्त्वना प्रदान करती है। आध्यात्मिकता हमारी संस्कृति से जुड़ा है, क्योंकि भारत के लोग आत्मा–परमात्मा विश्वास करते है और समस्त जीव जगत इसी में लीन है। इन्ही तत्वो की खोज को कविता के तल पर लाकर कविता में आध्यात्मिक चेतना की खोज कई रचनाकारों ने की है। एक कवि मे जो उसके अन्तः ज्योति से स्फुरित होता है, उसके माध्यम से वह आम जनमानस तक पँहुचाने का प्रयत्न करता है और जीवन दर्शन का मार्ग प्रशस्त करता है। इसमे प्रमुखतया उनकी समर्पण भावना परिलक्षित होती है। नीरज जी ने अपने काव्यों में मानवतावादी विचारों से ओतप्रोत अनन्त रूपी ज्ञान का अविष्कार करके इस जगत के वैयिक्ति और भौतिक दुख को प्रस्तुत किया है। अध्यात्मिक अनुभूति की अभिलाषा हमे काव्य से ही प्राप्त होती है। कवि अपने काव्यों द्वारा विराटता या वैचिन्य का दर्शन पाठक को करा देता है।

मुख्य शब्द

आध्यात्मिक, ग्रंथ, दर्शन, जीवन चेतना.

नीरज जी की कविताओं में आध्यात्मिक चेतना के आधार

नीरज जी मुख्य रूप से दार्शनिक कवि है। कवि होने के नाते उन्होने प्राणगीत की भूमिका को ऐसे प्रस्तुत किया है: ''कविता की व्याख्या करने का अर्थ है अपनी व्याख्या करना'' उस चेतना की व्याख्या करना जिसके हम कवि है। वह चेतना अखण्ड है इसलिए आनन्द स्वरूप है।

आत्मा और जीवन के संबंध में नीरज जी ने कहा है कि अपनी आत्मा के साथी के लिए जो खोज हम विभिन्न रूप में कर रहे है उसका नाम जीवन है। जीवन को उन्होंने अपने गीतों में विभिन्न रूप में प्रस्तुत किया है जो भारतीय जीवन दर्शन से ओतप्रोत है। उन्होने माना है कि अपने काव्य का स्थायित्व भगवद् गीता, उपनिषद्, मानवतावाद, बुद्ध दर्शन, और जैन दर्शन के आधार पर है।

1. **भगवद्गीताः** गीता भारतीय संस्कृति की आत्मा का, समस्त मानव समाज के कल्याण के लिए एक अनर्घ उपहार है। गीता के जीवनप्रद उपदेश और संदेश को नीरज जी के गीतों द्वारा प्रसतुत करने का प्रयास किया गया है।
2. **मानवतावादः** वास्तव में प्राचीन काल से ही भारत देश में मानवतावाद प्रचलित है। मानवतावाद मे मानव के सुख सुविधा प्रत्येक मानव में नारायण की छवि देखना, मानव की महत्ता बढ़ाना आदि भावनाएं समायोजित है। नीरज जी की कविताएं मानवतावादी भावनाओ से समृद्ध मिलती है। वस्तुतः नीरज जी मानवतावादी कवि है।
3. **उपनिषदः** भारतीय दर्शन के प्रमुख आधार उपनिषद है। मार्क्सवाद मे जो कहा है वह उपनिषद के सहारे। नीरज जी ने ज्ञान का दर्शन अपने गीतों के द्वारा किये है। अनादि और अनन्त रूपी ज्ञान ही उपनिषद के प्रमुख विषय है।
4. **बुद्ध दर्शनः** बुद्ध दर्शन में जगत के संबंध में केवल पौराणिक दृष्टिकोण से ही विचार नही किया है। उन्होने बहुत से दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये है। उन दार्शनिक दृष्टिकोणों का विकास आगे चलकर विविध रूपों में हुआ है।
5. **जैन दर्शनः** जैन धर्म की गणना संसार के प्रमुख, प्रभावपूर्ण और प्रतिष्ठित धर्मो मे की जाती है। यह विश्व की संस्कृति को अनेक मौलिक तथा अभिनय प्रदान करती है जो आज की मानवता के लिए अत्यंत उपादेय है।

नीरज की कविताओं में आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति प्रतीको के रूप में

प्रतीक कलात्मक अभिव्यक्ति का आधार भूत तत्व है, काव्यगत् समस्त अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक होती है। महान कवि रवीन्द्र नाथ टैंगोर ने कहा था कि कवि अपने अनुभव के भीतर ही किन्तु अनुभव से स्वतंत्र एक शक्ति का अन्वेषण कर लेता है।

नीरज जी की कविताओं में अनेक ऐसे शब्द आये है जो किसी प्रकार आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में है जो इस प्रकार हैः

1. **कदम्बः**

''सारा जग मधुवन लगता है'' कविता में नीरज जी 'कदम्ब' शब्द का प्रयोग किया है।

''डगर–डगर छाया कदम्ब की।''

हमेशा से कदम्ब वृक्ष की महत्ता रही राधा और कृष्ण की क्रीड़ास्थली, वृन्दावन स्थित कदंब वृक्षो की छायामय भूमि रही है। अतः कृष्ण काव्य में कदम्ब वृक्ष का यत्र–तत्र उल्लेख होता ही रहा है। नीरज जी की ये कविता प्रेम की है फिर भी प्रतीकात्मकता की दृष्टि से उनकी क्रीड़ास्थली में कदम्ब वृक्ष से जुड़ी है।

2. **बरसातः**

''अब सही जाती नही यह निर्दयी बरसात
खिड़की बन्द कर दो।''

इसमें बरसात जीवन का प्रतीक है। जीवन में अनेक मुश्किलो को सहना पड़ता है।

''यह खड़ी बौछार, यह ठण्डी हवाओं के झकोरे
बादलों के हाथ मे यह, बिजलियों के हाथ बोरे,
कह न दे फिर प्राण से कोई पुरानी बात,
खिड़की बन्द कर दो।''

3. **हंसः**

''पर है कुछ न शिकायत तुमसे, केवल इतना ही बतला दे,
मोती सब चुग गया हंस, तब मानसरोवर का क्या होगा?''

कुछ मनीषी हंस को जीवन का प्रतीक मानते है, वेदो में भी हंस को जीव का प्रतीक माना गया है। पवित्र पक्षी हंस आत्मा का उपमान है। जीव अथवा आत्मा शरीर रूपी पिजड़े में कैद रहता है। पंछियों के भाँति ही जीव जब शरीर रूपी पिंजड़े से मुक्त होता है तो परम आनन्द स्वरूप शिखर की ओर उड़ जाता है। वह सार तत्व ग्रहण कर व्यर्थ की चीजों को छोड़ देता है।

4. **कमलः**

साहित्य और कला के क्षेत्र में चिरकाल से कमल का अद्वितीय स्थान रहा है। उसका प्रयोग आँख, मुख, पाँव, कोमलता आदि के उपमानों के रूप में होता रहा है। मिथक साहित्य में अनेक देवी देवताओं तथा तंत्र–मंत्र में उसका विशिष्ट स्थान है। नीरज जी ने 'माँ! जल भरन र जाऊँ' में कमल शब्द का प्रयोग किया है।

''झुककर करे प्रणाम कभी तो
कभी खड़ा हो तनकर आगे
लिख–लिख फेंके पत्र राह में
कभी झटककर आँचल भाग
कभी कहे तो चन्द्र किशोरी
कभी कहे तू कली कमल की''

कमल मानव के सम्मुख निर्लिप्त कर्त्तव्य परायणता का प्रतीक बन कर उसे मोक्ष की ओर उन्मुख होने का मार्ग दिखलाता है।

निष्कर्ष

नीरज जी ने अपने काव्यों में कुछ परिचित आध्यात्मिक प्रतीक ला दिया है वह साधारण रूप से पड़ने पर लोगों को काव्यानन्द मिलता है साथ ही लौकिक जीवन से मुक्ति पाने के लिए इन प्रतीको को चित्रित भी किया है। प्रतीको द्वारा अदृश्य सत् की अभिव्यक्ति आध्यात्मिक चेतना जगा देती है। जहाँ एक ओर उनके कविताओं मे आध्यात्मिक चेतना के आधार मानवतावाद से जुड़े है, वही उनके प्रतीक हंस रूपी जीव, बरसात रूपी जीवन के दुःखों को झेलते हुये कमल रूपी मन से साधना करके ब्रम्ह से एकरूपता स्थापित करने के अभिलाषी है।

संदर्भ सूची

1. कुमार विमल, *''सौन्दर्य शास्त्र के तत्व''* पृ.सं. 269।
2. नीरज, *''उनकी याद हमे आती है''*, नीरज रचनावली खण्ड–3 पृ.सं.90।
3. नीरज, *''खड़की बन्द कर दो''*, नीरज रचनावली खण्ड–3 पृ.सं. 93।
4. नीरज, *''गीत''*, नीरज रचनावली खण्ड–3 पृ.सं. 135।
5. दुबे, लक्ष्मीनारायाण, *''हिन्दी साहित्य में जैन दर्शन''*, पृ.सं. 18।

****